The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

गीतांजलि श्री कृत- "हाशिये पर" कहानी में प्रदूषण समस्या

मंजरी
पीएच.डी. शोधार्थी,
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, धारवाड़ केंद्र

शोध सार-

गीतांजलि श्री की कहानी 'हाशिये पर' समकालीन शहरी जीवन के उन जटिल और अनदेखे पक्षों को उजागर करती है, जो समाज की निचली पायदान पर खड़े लोगों के अस्तित्व, संघर्ष और हाशिए के अनुभवों से जुड़े हैं। यह कहानी केवल सामाजिक और वर्गीय भेदभाव का चित्रण नहीं करती, बल्कि उसमें छिपी हुई पर्यावरणीय चिंता, विशेष रूप से प्रदूषण समस्या, भी एक महत्त्वपूर्ण विमर्श के रूप में उभरती है। कहानी के पात्र शहर की उस जगह पर रहते हैं, जहाँ गंदगी, कूड़ा, बदबू, और प्रदूषण ही उनका दैनिक अनुभव है। ये वे इलाके हैं, जो तथाकथित "विकास" की दौड़ में हाशिए पर धकेल दिए गए हैं। शहर का कूड़ा-कचरा, औद्योगिक कचरा और अव्यवस्थित नगरीकरण, न केवल इन बस्तियों को गंदा करते हैं, बल्कि वहाँ रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य, जीवन और सम्मान को भी प्रदूषित करते हैं। लेखिका प्रदूषण को केवल भौतिक या जैविक समस्या नहीं मानती, बल्कि वह इसे एक सामाजिक और मानसिक प्रदूषण के रूप में भी रेखांकित करती हैं, जिसमें गरीबी, असमानता और उपेक्षा गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। इस कहानी में प्रदूषण केवल वातावरण में व्याप्त गंदगी नहीं है, बल्कि सत्ता और समाज के उस दृष्टिकोण का भी प्रतीक है, जो हाशिए पर रह रहे लोगों को 'अस्वच्छ', 'निचला' और 'गैरजरूरी' मानता है।

यह शोध आलेख इस बात पर केंद्रित है कि 'हाशिये पर' कहानी में प्रदूषण एक व्यापक सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत होता है। यह न केवल पर्यावरणीय असंतुलन को दर्शाता है, बल्कि समाज में व्याप्त वर्गीय भेद, गंदगी के प्रति सरकारी उदासीनता, और गरीबों के अस्तित्व की उपेक्षा को भी उजागर करता है।

संकेत शब्द- प्रदूषण, पर्यावरण, अस्तित्व, औद्योगिक प्रगति, विकास, चेतना

प्रदूषण समस्या का वैश्विक परिप्रेक्ष्य-

प्रदूषण की समस्या आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है, जिसका सामना आज बड़े-बड़े विकसित और विकासशील देश कर रहे हैं। यह समस्या अब धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बन गया है। इस समस्या को हल करने के लिए आज सभी देश एकजुट हैं। प्रदूषण के बढ़ते प्रभाव के कारण वनस्पति पर्यावरण, वायुमण्डल, स्वास्थ्य में कई नकारात्मक परिवर्तन आए हैं। औद्योगिक क्षेत्रों में प्रगति के कारण पर्यावरण में संतुलन बिगड़ गया है। जहरीली गैसों को हवा और दूषित जल को समुद्रों, नदियों में प्रवाहित कर देने से मनुष्य जाति और पशु-पक्षी और वनस्पति इससे प्रभावित हुई हैं।

कई देशों ने प्रदूषण की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाए हैं, जिससे पर्यावरण में संतुलन बना रहे। भारत में 'गंगा एक्शन प्लान', 'स्वच्छ भारत मिशन' और वृक्षारोपण अभियान जैसे प्रयास हुए हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'पेरिस समझौता', 'क्योटो प्रोटोकॉल' और 'क्लाइमेट समिट' जैसे समझौते हुए हैं। इन सबका उद्देश्य है- प्रदूषण को नियंत्रित करना और मानव जीवन को सुरक्षित बनाए रखना।

गीतांजलि श्री और पर्यावरणीय चेतना-

लेखिका गीतांजलि श्री प्रदूषण की बढ़ती समस्या को केंद्र बिन्दु बनाकर अपने साहित्य में पर्यावरण के प्रति अपनी चेतनशीलता का परिचय देती हैं। लेखिका आधुनिकता को बुरा नहीं मानतीं, लेकिन आधुनिकता और औद्योगिक विकास, जहाँ देश की प्रगति का सूचक है, वहीं मानव जाति के विनाश और प्रकृति की तबाही का कारण भी है। लेखिका प्रकृति के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करती हैं और मनुष्य को कृत्रिम जीवन जीने के बजाय, प्रकृति की गोद में जाने का संदेश देती हैं।

'हाशिये पर' कहानी में प्रकृति और प्रदूषण का गहरा संबंध स्थापित किया गया है। लेखिका ने भारत की जलवायु को सहज प्राकृतिक परिवर्तन माना है, जिसे हर देशवासी अपनाता है। इसके विपरीत विदेशों में लोग कृत्रिम साधनों का प्रयोग कर जीवन को सहज न जीकर कृत्रिमता में ढालते हैं। यही कारण है कि वहाँ प्रकृति के साथ आत्मीय संबंध कमजोर हो जाता है।

पात्र और प्रदूषण का अनुभव-

हाशिये पर कहानी की नायिका और रजत के बीच संवाद प्रदूषण की समस्या का यथार्थ चित्रण करते हैं। जर्मनी में रहने वाली नायिका बताती है कि कैसे वहाँ के अस्पतालों में नवजात शिशु भी वायु प्रदूषण के कारण बीमार फेफड़ों के साथ पैदा होते हैं। यह स्थिति केवल पर्यावरणीय असंतुलन ही नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व पर सीधा संकट है।

रजत के माध्यम से फ्रांस और जर्मनी की तुलना में यह स्पष्ट होता है कि पश्चिमी देशों में औद्योगिकीकरण ने पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव डाला है। जहरीली हवा और प्रदूषित जल जीवन और वनस्पतियों को प्रभावित कर रहे हैं। यह विमर्श वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय न्याय की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

औद्योगिकीकरण और शहरीकरण की समस्या-

औद्योगिकीकरण और शहरीकरण विकास का प्रतीक माना जाता है, लेकिन इनके दुष्प्रभाव भी गंभीर हैं। बस्तियों का फैलाव, कचरे का ढेर, गंदगी, पानी और हवा का प्रदूषण—ये सब शहरी जीवन का हिस्सा बन गए हैं। गरीब और हाशिए के लोग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, क्योंकि उन्हें प्रदूषित वातावरण में जीना पड़ता है।

लेखिका के अनुसार, यह प्रदूषण केवल भौतिक नहीं है, बल्कि मानसिक और सामाजिक भी है। समाज अमीर-गरीब, स्वच्छ-अस्वच्छ के आधार पर विभाजित हो गया है। यह विभाजन मनुष्य की गरिमा और अस्तित्व पर चोट करता है।

साहित्य में पर्यावरणीय विमर्श-

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंता नई नहीं है। प्रेमचंद की कहानियों से लेकर समकालीन लेखकों तक प्रकृति और पर्यावरण को रचनाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। महाश्वेता देवी ने आदिवासी जीवन और जंगलों के कटान को उठाया, निर्मल वर्मा ने शहर और प्रकृति के द्वंद्व को प्रस्तुत किया। गीतांजलि श्री इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रदूषण समस्या को एक गहन सामाजिक विमर्श से जोड़ती हैं।

धर्म, संस्कृति और पर्यावरण-

गीतांजलि श्री ने अपने साहित्य में धर्म और संस्कृति को समाज के लिए हितकर माना है। धर्म और संस्कृति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन जीने की शैली है। प्रकृति का सम्मान, पेड़ों की पूजा, नदियों को माता मानना—ये सब भारतीय संस्कृति में गहराई से जुड़े हैं। यही कारण है कि भारतीय समाज में पर्यावरणीय चेतना सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा रही है।

आज के भौतिकवादी युग में यह चेतना कमजोर पड़ी है। लोग प्रकृति से दूर होकर कृत्रिम साधनों पर अधिक निर्भर हो गए हैं। यही प्रवृत्ति प्रदूषण की समस्या को और गंभीर बनाती है।

समाधान की ओर-

लेखिका मानती हैं कि प्रदूषण की समस्या का समाधान केवल वैज्ञानिक तकनीक से नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और जीवनशैली में बदलाव से संभव है। वृक्षारोपण, जंगलों की रक्षा, स्वच्छता की आदत, औद्योगिक उत्सर्जन पर नियंत्रण, और प्राकृतिक जीवन की ओर लौटना ही प्रदूषण की रोकथाम के वास्तविक उपाय हैं।

निष्कर्ष-

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि गीतांजलि श्री की कहानी 'हाशिये पर' केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि पर्यावरणीय चेतना का जीवंत दस्तावेज है। इसमें प्रदूषण को केवल वैज्ञानिक या भौतिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय और सत्ता संरचना के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कहानी हमें यह सोचने पर विवश करती है कि प्रदूषण से सबसे अधिक प्रभावित वही लोग होते हैं, जो पहले से ही हाशिए पर हैं।

कहानी का महत्त्व इस तथ्य में है कि यह हमें पर्यावरणीय न्याय (Environmental Justice) की ओर उन्मुख करती है। आधुनिक औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के युग में, जब हम विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं, तब यह कहानी हमें चेतावनी देती है कि यदि हमने समय रहते प्रकृति को महत्त्व नहीं दिया, तो न केवल पर्यावरण असंतुलित होगा, बल्कि सामाजिक ताने-बाने पर भी गंभीर संकट आ खड़ा होगा।

प्रकृति केवल जीवन का आधार नहीं है, बल्कि संस्कृति, धर्म और मानव अस्तित्व का भी मूल स्रोत है। इसलिए प्रदूषण से लड़ना केवल पर्यावरण की रक्षा करना नहीं, बल्कि मानवता की रक्षा करना है। इस दृष्टि से 'हाशिये पर' कहानी एक प्रेरणादायक और चेतनाशील कृति है, जो साहित्य और समाज दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूचि :

1-गीतांजलि श्री अनुगूँज (हाशिये पर) पृष्ठ-116

2-गीतांजलि श्री अनुगूँज (हाशिये पर) पृष्ठ-115

3-गीतांजलि श्री अनुगूँज (हाशिये पर) पृष्ठ 112

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

मंजरी"गीतांजलि श्री कृत- "हाशिये पर" कहानी में प्रदूषण समस्या" *The Research Dialogue,* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp-306-309, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/30
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मंजरी

for publication of research paper title

“गीतांजलि श्री कृत- "हाशिये पर" कहानी में प्रदूषण समस्या”

Published in ‘The Research Dialogue’ Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and
E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY